12

एकाग्र जीवन जीना

(फिलिप्पियों 3:10-16)

एक भूखा चीता हिरण की गंध का पीछा करने लगा। हिरण का पीछा करते-करते उसे खरगोश की गंध मिल गई। वह थोड़ा मुड़कर खरगोश के पीछे जाने लगा। फिर उसका ध्यान चूहे की गंध से भटक गया और वह उसके पीछे चलने लगा। अन्त में वह उस बिल में चला गया, जिसे चूहे ने मिटा दिया था। दिन के अन्त में वह उससे भी भूखा था, जितना दिन के आरम्भ में था। इस कहानी से पता चलता है कि हम में से कुछ लोग किस प्रकार अपने जीवन बिताते हैं: इस या उस बात से ध्यान हटने से अन्त में कुछ प्राप्त न होने तक।

आमतौर पर अच्छी प्राप्तियां करने वाले लोग ऐसा अपने विचारों और ऊर्जा को एक लक्ष्य पर एकाग्र करके करते हैं। जब मैं लड़का था तो मेरे पिता ने मुझे ग्लैन कलिंगन (1909-88) की कहानी और मील दौड़ में विश्व कीर्तिमान स्थापित करने की उसकी कहानी बताई। ग्लैन और उसके भाई ने कैंसस के एक देहाती स्कूल में पढ़ाई की। सर्दियों की एक सुबह वे भट्ठी में आग जला रहे थे कि इमारत को आग लग गई। ग्लैन ने अपने भाई को निकालने की कोशिश की। वह दहलीज में बेहोश हो गया। लोग वहां आ पहुंचे और उन्होंने दोनों लड़कों को निकाल लिया। दोनों बुरी तरह से जल चुके थे। जब डॉक्टर पहुंचा तो उसने ग्लैन के भाई को मृत घोषित कर दिया और कहा, ''ग्लैन नहीं बचेगा।'' कई दिनों बाद डॉक्टर ने कहा, ''वह जीवित तो रहेगा पर कभी चल नहीं पाएगा।'' ग्लैन ने अपने पिता से कहा कि वह छड़ी[1] उसके हाथ से बांध दें ताकि वह खड़ा होकर सीधा चल सके। अन्त में वह पैर घसीटते हुए चलने लगा। फिर वह बिना पैर घसीटे चलने लगा। फिर वह भागने लगा। उसने मील दौड़ में कॉलेज का, राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय कीर्तिमान स्थापित कर दिए। वह अपने समय के बेहतरीन धावकों में से एक बन गया, क्योंकि उसका जीवन एकाग्र था।

हमारे पाठ के लिए वचन पाठ 3:10-16 में, हमें जीवन अर्थात जीवन के आत्मिक फोकस या एकाग्रता मिलती है। पौलुस ने लिखा, ''परन्तु मैं केवल यह एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गई हैं, उनको भूलकर आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ, निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं, जिस के लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है'' (आयतें 13ख, 14)। मुझे यह आयत अद्‌भुत लगती है। ''एक काम करता हूं।'' यह नहीं कि ''मैंने सौ काम शुरू कर दिए या मैं दर्जन भर काम करने का प्रयास करता हूं,'' बल्कि यह कि ''*एक* काम करता हूं।'' ''करता हूं'' शब्द अनुवादकों द्वारा जुटाए गए हैं। मूल धर्मशास्त्र का अक्षरश: अर्थ कुछ इस प्रकार होगा: ''एक बात! जो पीछे छोड़ दी उसे भुलाकर।'' LB में इसका अनुवाद इस प्रकार है, ''मैं अपनी सारी शक्ति इस एक काम को करने के लिए लगाता हूं।''

मुझे इस अवधारणा की समझ नहीं आती। मैं कई कामों में लग जाता हूं और अन्त में उन में

से अधिकतर काम मैं पूरी क्षमता से नहीं कर पाता। मैं अपने जीवन को थोड़ी सफलता के साथ सरल बनाने की कोशिश करता हूं। मैंने अपने डेस्क के पास वाली दीवार पर यह जर्मन कहावत लगा रखी है: ''जो बहुत बातों से आरम्भ करता है, वह प्राप्त बहुत कम करता है।'' किसी मित्र ने बताया कि उसका संकल्प था ''थोड़ा करो पर बेहतर करो।'' मैंने वही संकल्प लेने की कोशिश की पर जल्दी ही छोड़ दिया। शायद आपको भी एकाग्र बने रहने में दिक्कत आती है। यदि हां, तो पौलुस के एकाग्र जीवन का अध्ययन हम दोनों की सहायता कर सकता है।

एक व्यक्ति पर एकाग्र (3:10, 11)

अपने पिछले अध्ययन में हमने पौलुस के ये शब्द पढ़े थे: ''मैं अपने प्रभु मसीह यीशु की *पहचान* की उत्तमता के कारण सब बातों को हानि समझता हूं'' (3:8क)। हमने ज़ोर दिया था कि मसीह को ''पहचानना'' केवल उसके बारे में जानना ही नहीं, बल्कि इससे बढ़कर है यानी इसमें उसके साथ *सम्बन्ध* को बढ़ाना है। गैरल्ड हाथॉर्न ने अवलोकन किया कि पौलुस ''सब बातों को हानि मानने'' को तैयार था क्योंकि ''*एक बार* ... का अब सबसे अधिक मूल्य था, अब की बार मसीह यीशु को व्यक्तिगत रूप से जानना था।''[2]

मसीह को जानने की प्रेरित की इच्छा को 10 और 11 आयतों में विस्तार दिया गया है: ''और मैं उसको और उसके मृत्युंजय की सामर्थ को, और उसके साथ दुखों में सहभागी होने के मर्म को जानूं, और उस की मृत्यु की समानता को प्राप्त करूं, ताकि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से जी उठने के पद तक पहुंचू।'' पौलुस को इस अर्थ में मसीह की पहले से पहचान थी कि वह उसके साथ विशेष सम्बन्ध का आनन्द ले रहा था (गलातियों 2:20), पर उसे अभी भी और गहराई से और अधिक ज्ञान की तड़प थी। एक उदाहरण, जो ध्यान में आता है वह मेरी शादी से जुड़ा है। जब जो (19 वर्ष की ''प्रौढ़'' आयु में) के साथ मेरा विवाह हुआ, तो मुझे लगा कि मैं उसे जानता हूं। वर्षों बीतने पर वह ज्ञान बढ़ गया है, परन्तु विवाह के लगभग पचास साल बाद भी, आज भी वह मुझे चकित कर सकती है। उसके विषय में मेरा ज्ञान अभी भी अधूरा है।

इस जीवन में मसीह को जानना

पौलुस यीशु के बारे में *सब कुछ* जानना चाहता था। वह *''उसके मृत्युंजय की सामर्थ को'' जानना चाहता था (आयत 10क)।*[3] यह हवाला उस सामर्थ के विषय में हो सकता है जिसके द्वारा मसीह हमें मुर्दों में से जिलाएगा (देखें 3:21)। परन्तु पौलुस के मन में वह सामर्थ या शक्ति होगी जो जी उठे प्रभु के द्वारा मसीह व्यक्ति को मिली है। प्रेरित का जीवन पहले से ही इस सामर्थ से आशीषित था। उसने लिखा, ''मैं शरीर में अब जो जीवित हूं तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिसने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिए अपने आप को दे दिया'' (गलातियों 2:20)। फिर उसने लिखा, ''जो मुझे सामर्थ देता है उसमें मैं सब कुछ कर सकता हूं'' (फिलिप्पियों 4:13)। इसके साथ ही प्रेरित ने उस सामर्थ और शक्ति के निरन्तर *नया होते रहने* की आवश्यकता को महसूस किया। बैटरियों को यदि रीचार्ज न किया जाए तो वे ''डैड'' हो जाती हैं। इसी प्रकार से हम में से किसी को समय-समय पर ''रीचार्ज'' होने की आवश्यकता होती है।

इसके अलावा, *पौलुस ''उसके साथ दुखों में सहभागी होने'' को जानना चाहता था (आयत 10ग)।* ''सहभागी'' का अर्थ ''साझी'' या ''मिलकर'' सहना है। पौलुस को लगा कि मसीह को पूरी तरह कोई भी तब तक नहीं जान सकता, जब तक उसके दुखों में सहभागी न हो! कुछ लोग ऐसी सहभागिता पर इतना जोश नहीं दिखाते। रॉबर्ट लेड ला ने कहा है कि उसने आमतौर पर ''सेवा के लिए बचाया गया'' लक्ष्य को देखा तो था पर उसने ''दुख उठाने के लिए बचाया गया'' लक्ष्य को कभी नहीं देखा।[4] पौलुस ने मसीह के दुखों में योगदान दिया *था।* उसने लिखा, ''मैं यीशु के दागों को अपनी देह में लिए फिरता हूं'' (गलातियों 6:17)। कुरिन्थियों के नामपत्र में उसने लिखा:

> हम यीशु की मृत्यु को अपनी देह में हर समय लिए फिरते हैं; कि यीशु का जीवन भी हमारी देह में प्रकट हो। क्योंकि हम जीते जी सर्वदा यीशु के कारण मृत्यु के हाथ में सौंपे जाते हैं कि यीशु का जीवन भी हमारे मरनहार शरीर में प्रकट हो (2 कुरिन्थियों 4:10, 11)

मसीह के काम के लिए दुख उठाकर पौलुस को और भी स्पष्टता से समझ आया कि प्रभु ने उसके लिए क्यों दुख उठाया था। वह मसीह को और बेहतर ढंग से जान पाया।

पौलुस ने अपने विचार को *''उस की मृत्यु की समानता को प्राप्त करूं'' शब्दों से समाप्त किया (आयत 10घ)।* प्रभु की सहायता से, वह स्वयं और संसार से मर रहा था। वह लिख पाया, ''मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है'' (गलातियों 2:20क, ख)।

मसीह को और अच्छी तरह से जानने की पौलुस की इच्छा के कम से कम चार पहलू थे:

- व्यक्तिगत अनुभव: ''कि मैं उसे जानूं।''
- सामर्थपूर्ण अनुभव: ''और उसके मृत्युंजय की सामर्थ को।''
- एक पीड़ादायक अनुभव: ''उसके साथ दुखों में सहभागी होने के मर्म को।''
- एक व्यवहारिक अनुभव: ''उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूं।''[5]

मुझे रोमियों 6 का स्मरण आता है जो मसीह को जानने की लालसा के आरम्भ के साथ बताता है कि मसीही व्यक्ति के जीवन में क्या होना चाहिए। इन आयतों को पढ़ते हुए मसीह के कष्टों और पुनरुत्थान पर जोर के साथ उसकी मृत्यु की समानता में होने की आवश्यकता पर ज़ोर को देखें:

> क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें, क्योंकि यदि हम उसकी मृत्यु की समानता में उसके साथ जुट गए हैं, तो निश्चय उसके जी उठने की समानता में भी जुट जाएंगे। क्योंकि हम जानते हैं, कि हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ

हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें। क्योंकि जो मर गया, वह पाप से छूटकर धर्मी ठहरा।

सो यदि हम मसीह के साथ मर गए, तो हमारा विश्वास यह है कि उसके साथ जीएंगे भी, क्योंकि यह जानते हैं, कि मसीह मरे हुओं में से जी उठकर फिर मरने का नहीं, उस पर फिर मृत्यु की प्रभुता नहीं होने की। क्योंकि वह जो मर गया तो पाप के लिए एक ही बार मर गया; परन्तु जो जीवित है, तो परमेश्वर के लिए जीवित है। ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिए तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिए मसीह यीशु में जीवित समझो (रोमियों 6:3-11)।

पश्चात्तापी विश्वासी के रूप में बपतिस्मा (पानी में डुबकी) मसीह को जानने के लिए आने का आरम्भ है न कि यात्रा की समाप्ति। यीशु ने कहा, ''यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आपे से इन्कार करे और *प्रति* दिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले'' (लूका 9:23)।

अगले जीवन में मसीह को जानना

यदि हम यीशु के पीछे चलने के लिए अपने आपको समर्पित भी कर दें तो क्या हम इस जीवन में उसके बारे में सब कुछ जान सकते हैं? नहीं। पौलुस को इसकी समझ थी, सो उसने उस समय के आगे देखा, जब उसने स्वर्ग में मसीह की उपस्थिति में होना था। स्पष्टतया उसके मन में 3:11 में यही था: ''ताकि मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से जी उठने के पद तक पहुंचूं।''

अनुवादित शब्द ''मरे हुओं में से जी उठने'' नये नियम में केवल यहां मिलने वाला एक असामान्य शब्द है। यह ''बाहर'' या ''से बाहर'' (ek) के अर्थ वाले उपसर्ग के साथ ''पुनरुत्थान'' के लिए सामान्य शब्द के पहले आने वाले शब्द (*anastasis*) का मिश्रित यूनानी शब्द है। प्रेरित ने ''मुर्दों में से पुनरुत्थान में से'' की बात की। हिन्दी में यह फालतू है, पर यूनानी भाषा में शब्दों को दोहराना किसी बात पर ज़ोर देने का एक ढंग होता था। यह ज़ोर देने के लिए कि वह उन कुछ *एक में से* जो जी उठेंगे (यानी, ''से अलग'' या ''से दूर'' जी उठेगा)।

यीशु ने एक सामान्य पुनरुत्थान की बात बताई जिसमें ''*जितने* कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। जिन्होंने भलाई की है, वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे'' (यूहन्ना 5:28, 29)। फिलिप्पियों 3:11 में पौलुस कह रहा होगा कि उसे ''जिन्होंने भलाई की है, वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे'' के रूप में जी उठने की उम्मीद थी न कि ''जिन्होंने बुराई की है, वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे'' के रूप में।

''जीवन के पुनरुत्थान'' से अद्‌भुत आशिषें मिलेंगी। यह वह समय होगा, जब सब झगड़े निपटा लिए जाएंगे, सब बीमारियां ठीक कर दी जाएंगी, सब मानवीय कमज़ोरियां (नैतिक और शारीरिक दोनों) मिटा दी जाएंगी, और सब गलतियां सदा के लिए सुधार दी जाएंगी।[6] परन्तु पौलुस के लिए मसीह की कोई भी आशीष मसीह को पूरी तरह से जान लेने से बड़ी नहीं थी।

इससे पहले कि हम आयत 11 को छोड़ें, मैं यूनानी शब्द के अनुवाद ''ताकि'' पर कुछ

कहना चाहता हूं। इस अनुवाद से हमें आयत 10 से आयत 11 में आसानी से जाने का अवसर मिलता है: ''... उसकी मृत्यु की समानता को प्राप्त करूं। *ताकि* मैं किसी भी रीति से मरे हुओं में से जी उठने के पद तक पहुंचूं।'' वास्तव में यह बदलाव मूल धर्मशास्त्र में उतना स्पष्ट नहीं है, जितना NASB में सुझाया गया है।[7] आयत का आरम्भ ''यदि'' (*esi*) अर्थ वाले शब्द और ''कैसे'' या ''किसी तरह'' (*pos*) के लिए शब्द के साथ होता है। NASB वाली मेरी प्रति में आयत 11 के आरम्भ में यह नोट है: ''मूल [तया] *यदि किसी तरह।*'' KJV में इस आयत का आरम्भ ''यदि किसी प्रकार'' से होता है। NIV में है ''और इस प्रकार, किसी तरह।'' RSV में है, ''यदि सम्भव हो।''

''यदि,'' ''किसी तरह,'' और ''यदि सम्भव हो'' जैसे वाक्यांशों के इस्तेमाल में कइयों को हैरानी में डाल दिया है कि पौलुस को प्रभु के साथ होने के लिए जी उठने पर संदेह तो नहीं था। अन्य आयतों से संकेत मिलता है कि इस बात में पौलुस को कोई संदेह नहीं था (देखें 2 तीमुथियुस 4:8)। फिलिप्पियों में पहले उसने यह भरोसा जताया था कि मरने पर वह ''मसीह के साथ'' होने के लिए जाएगा (1:23)। तो फिर उसने ''यदि किसी तरह'' अर्थ वाले वाक्यांश का इस्तेमाल क्यों किया? अधिकतर लेखकों का मानना है कि पौलुस शक नहीं बल्कि दीनता को दिखा रहा था, यानी वह यहां फिर इस बात को मान रहा था कि अपने किसी भी प्रयास से बचाया नहीं गया, बल्कि परमेश्वर के अनुग्रह से बचाया गया है। पतरस ने इसी सोच को तब दिखाया, जब उसने लिखा कि ''धर्मी व्यक्ति ही कठिनता से उद्धार पाएगा'' (1 पतरस 4:18)।

इस भाग की समाप्ति करते हुए हमें मुख्य विषय पर लौटना होगा: पौलुस मसीह को जानने पर ध्यान लगाए हुए था। हमारे जीवनों का मुख्य लक्ष्य भी वही होना चाहिए। यीशु की एक बात से लेते हुए, परमेश्वर को और मसीह को जानना जिसे उसने भेजा है, भी अनन्त जीवन है (देखें यूहन्ना 17:3)।

पुरस्कार पर एकाग्र (3:12-14)

यह हमें अपने पाठ के केन्द्र में ले आया है:

> यह मतलब नहीं, कि मैं पा चुका हूं, या सिद्ध हो चुका हूं: पर उस पदार्थ को पकड़ने के लिए दौड़ा चला जाता हूं, जिसके लिए मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था। हे भाइयो, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं; परन्तु केवल यह एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उनको भूलकर आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ। निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इमान पाऊं, जिसके लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है (आयतें 12-14)।

इस पद्य में वही आयतें हैं, जो पाठ के आरम्भ में दोहराई गई थीं। शब्दों पर और ध्यान से नज़र मारने पर हम देखते हैं कि पौलुस के ''एक काम'' के कई पहलू थे। इसमें उसके जीवन के सभी पहलू यानी उसका वर्तमान, उसका अतीत और उसका भविष्य शामिल था।

वर्तमान के सम्बन्ध में: दीनता आवश्यक थी!

पौलुस ने एक यहूदी के रूप में (आयतें 4-6) और किसी प्रकार उसने प्रभु के लिए सब

कुछ त्याग दिया था (आयतें 7, 8)। अपने अतीत के बारे में लिखा था। कोई निष्कर्ष निकाल सकता है कि प्रेरित सिद्ध होने का दावा कर रहा था, सो उसने जल्दी से कह दिया, ''यह मतलब नहीं कि मैं पा चुका हूं'' (आयत 12क)। NASB में ''इसे'' शब्द को जोड़कर इटैलिक किया गया है, जो इस बात का संकेत है कि इसे अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया। मूलतया पौलुस ने कहा, ''यह नहीं कि मैंने पा लिया है।'' क्या पा लिया? आयत 12 को आयत 11 से जोड़ें तो पहले लग सकता है कि पौलुस यह कह रहा था कि वह अभी जी नहीं उठा था। यह सच कहना बहुत स्पष्ट लग सकता है पर कइयों का विचार है कि पौलुस झूठी शिक्षा का सामना कर रहा था कि पुनरुत्थान हो चुका है (देखें 2 तीमुथियुस 2:18)। परन्तु आयत 12 को उस *सब* से जोड़ने पर जो पौलुस कह रहा था, सम्भवतया वह यह मान रहा था कि उसने अभी यीशु का पूर्ण ज्ञान नहीं पाया, जो पुनरुत्थान के समय मिलेगा।

पौलुस ने आगे कहा, ''... या सिद्ध हो चुका हूं।'' अनुवादित शब्द ''सिद्ध'' का मूल यूनानी शब्द (*telos*) है जिसका अर्थ है ''अन्त।'' जो ''सिद्ध'' है, वह अपने ''अन्त को पहुंच गया'' यानी इसने अपना उद्देश्य पा लिया है।[8] हमारे वचन पाठ में पौलुस ने इसका अर्थ दो अर्थों में किया। आयत 12 में वह मान रहा था कि वह ''सिद्ध'' नहीं। जैसा कि हम आमतौर पर इस शब्द का इस्तेमाल करते हैं। ऐसी सिद्धता यानी वह सब बनने पर जो उसे होना चाहिए था, प्रभु के उसे मुर्दों में से जिलाने से पहले नहीं होनी थी। आयत 13क में पौलुस ने यह कहते हुए आयत 12 के विचार पर और ज़ोर दिया, ''हे भाइयो कि मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं।'' (यूनानी धर्मशास्त्र में 3:13 में ''मेरी'' और ''मैं'' शब्दों को ज़ोर देने के लिए वाक्य के आरम्भ के निकट रखा गया था।) पौलुस ने उस सब को जो प्रभु चाहता था कि वह करे ''पकड़ा'' या पा नहीं लिया था।

यहां हमारे लिए एक सबक है। पौलुस यदि मसीह के बाद सबसे बड़ा नहीं तो नये नियम में सबसे बड़े लोगों में से एक था। उसकी यात्राओं और उसके प्रचार पर विचार करें। उसके लेखों और उसके प्रभाव पर ध्यान दें। प्रभु के बाद शायद किसी और ने संसार को पौलुस जितना प्रभावित नहीं किया। तौभी उसने यह नहीं माना कि उसने अपनी आत्मिक मंजिल पा ली है। जहां मैं रहता हूं वहां हम इसे इस तरह कहेंगे कि पौलुस ने यह नहीं सोचा कि उसने ''कर लिया है।'' यदि प्रेरित सिद्ध होने का दावा नहीं कर सकता था तो हम भी नहीं कर सकते। एकाग्र जीवन जीने के लिए हमें अपनी आत्मिक स्तुति की वास्तविकता को देखने की आवश्यकता है यानी यह कि हम कितनी दूर आ गए हैं और अभी और कितना आगे जाना है।

बाइबल की चुनौती मरने तक आत्मिक विकास करते रहने की है (इफिसियों 4:15; 2 पतरस 3:18)। जब कोई पेड़ बढ़ना बन्द कर देता है तो वह मर जाता है। कहानी बताई जाती है कि 91 साल की उम्र में सुप्रीम कोर्ट के जज ओलिवर वैंडल होम्ज़ (1841–1935) मूल यूनानी भाषा में दार्शनिक अफ़लातून को पढ़ रहा था। जब पूछा गया कि ऐसा ''क्यों'' तो उसका जवाब था, मैं अपने दिमाग को जवान और सक्रिय रखना चाहता हूं। इस संसार में जब हम जन्म लेते हैं तो परमेश्वर चाहता है कि हम शारीरिक और मानसिक रूप में बढ़ें। जब हम नया जन्म लेते हैं (यूहन्ना 3:3, 5) तो परमेश्वर चाहता है कि हम आत्मिक रूप में बढ़ें। सीखने के लिए हमेशा और बातें होती हैं, करने के लिए हमेशा और काम होते हैं और पाने के लिए और बढ़ना

होता है। वर्तमान के सम्बन्ध में हमें दीनता की आवश्यकता है।

अतीत के सम्बन्ध में: क्षमा की आवश्यकता!

पौलुस इस तथ्य का सामना कैसे कर पाया कि जो उसे आत्मिक रूप में होना चाहिए था वह नहीं था? वह इससे इस प्रकार से निपट पाया होगा: *''जो बातें पीछे रह गई हैं, उन को भूलकर'' (आयत 13ख)*। पौलुस ने अपने अतीत की हर बात को नहीं भुलाया। उसने परमेश्वर के वचन के अपने ज्ञान को नहीं भुलाया। उसने यह नहीं भुलाया कि प्रभु ने उसे अपने अनुग्रह से किस प्रकार बचाया था। उसने ऐसी किसी बात को नहीं भुलाया था जो जीवन में उसे सीखने को मिली थी। वे सबक कठिन तो थे पर उन से उसे यह जानने में सहायता मिली कि वह कौन है। पौलुस ने क्या *भुलाया?*

उसने अतीत की सफलताओं को भुला दिया। यहूदी के रूप में उसने अपनी प्राप्तियां बताईं (आयतें 4-6)। मसीही के रूप में उसने किए गए बलिदानों की बात बताई थी (आयतें 7, 8)। वह अपनी मिशनरी यात्राओं, यीशु के लिए जीते गए लोगों और प्रभु के लिए सहे गए कष्ट की बात भी बता सकता था। वह उसी के सहारे जो उसने पाया था, जीवन बिता सकता था पर उसने ऐसा नहीं किया। उन बातों को उसने पीछे छोड़ दिया था।

यदि परमेश्वर ने हमें सफलता देकर आशीषित किया है तो पिछली प्राप्तियों पर संतुष्ट होने का खतरा बना रहता है। सरदीश की कलीसिया का ''जीवित'' होने के लिए ''नाम'' (प्रतिष्ठा) था, पर मसीह का उपचार यह था कि यह ''मरी हुई'' थी (प्रकाशितवाक्य 3:1)। मसीही लोगों को वह समूह स्पष्टतया पिछली प्रतिष्ठा पर जीवित रहना चाहता था।

पौलुस ने अतीत की सफलताओं को भी भूला दिया। अपनी यहूदी प्राप्तियों की बात करते हुए उसने कलीसिया को सताने की भी बात जोड़ी (फिलिप्पियों 3:6)। एक मसीही के रूप में उसने माना कि वह ''पाया जा चुका'' नहीं था यानी वह ''सिद्ध'' नहीं था (आयत 12), और यह कि उसने अभी ''पकड़ा'' नहीं था (आयत 13)। पौलुस उन बातों पर जो उसने की थीं और जो नहीं की थीं खेद करते हुए हर दिन का हर पल बिता सकता था। उसने इस प्रकार से अपने समय को बर्बाद नहीं किया। अपने पापों से मन फिराने के बाद उसने परमेश्वर के अनुग्रह में भरोसा किया और अतीत को पीछे छोड़ दिया।

बहुत से लोग अतीत को अपने वर्तमान को बर्बाद करने देते हैं, जिससे उनका भविष्य भी बिगड़ जाता है। कई तो पिछली नाकामियों या पिछले पापों पर दोष की याद से परेशान रहते हैं। यदि आप कालांतर में नाकाम हुए हैं, जो कि हम सब होते हैं, तो अपनी कमियों से मन फिराएं, परमेश्वर से आपको क्षमा करने को कहें, बेहतर करने के लिए उससे सहायता मांगें और आगे बढ़ते रहें। एक जपानी कहावत है, ''सात बार गिरो; आठवीं बार उठ जाओ!'' और लोग पिछले दुर्व्यवहार पर कटुता से भरे हैं। जब आप किसी को अपने विचारों पर हावी होने की अनुमति देते हैं तो आप उसे अपने जीवन का नियन्त्रण सौंप देते हैं। अपने जीवन को वापस ले लें। परमेश्वर सहायता मांगे कि वह उसके प्रति जिसने आपके साथ दुर्व्यवहार किया है सही व्यवहार रखने में आपकी सहायता करे, और फिर जीवन के साथ आगे बढ़ें और भी हैं जो जीवन में पीछे की ओर देखकर उनका जीवन पहले कैसा था, अपने पुराने मार्गों में लौट जाने के प्रलोभन में आ जाते हैं।

यीशु की चेतावनी यहां उपयुक्त लगती है: ''जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं'' (लूका 9:62)।

और आगे जाने से पहले हमें यह पूछना आवश्यक है, ''पौलुस के यह कहने का क्या अर्थ था कि उसने अपने अतीत को भुला दिया?'' क्या उसके कहने का अर्थ था कि उसने अतीत को अपने स्मरण में से मिटा दिया? बाइबल बताती है कि जब परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करता है, तो वह ''उन्हें दोबारा स्मरण नहीं करता'' (देखें इब्रानियों 8:12; 10:17); परन्तु क्या इसका अर्थ यह है कि वह उन्हें अपने स्मरण में से मिटा देता है? नहीं, बाइबल बहुत पहले क्षमा किए गए पापों के परमेश्वर की प्रेरणा से दिए गए विवरणों से भरी है। जब परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा कर देता है तो वह इस अर्थ में ''उन्हें फिर स्मरण नहीं करता'' कि वह हमें उनके लिए जवाबदेह नहीं ठहराता। यानी वे *ऐसे* हो जाते हैं, जैसे कभी हुए ही नहीं। यह स्पष्ट है कि परमेश्वर ने अपने स्मरण में से उसके अतीत को नहीं मिटाया था, क्योंकि वह आयत 13 के बाद की अगली आयतों में उन बीते दिनों की बात कर रहा था। तो फिर उसके कहने का क्या अर्थ था?

- कि वह अतीत के सहारे नहीं था।
- कि उसने अतीत को अपने विचारों पर हावी नहीं होने दिया।
- कि उसने अतीत को उसका ध्यान उससे हटाने की अनुमति नहीं दी, जो उसे वर्तमान में करना आवश्यक है।

3:12-14 में पौलुस ने दौड़ में भाग लेने वाले रूपक का इस्तेमाल किया।[9] अतीत को भुलाने का प्रेरित का निश्चय उस रूपक से दो प्रकार से जुड़ा है: पहला, दौड़ में भाग लेने के लिए, व्यक्ति को किसी ऐसी भी जो उसे रोकती हो दूर कर देना आवश्यक है (देखें इब्रानियों 12:1)। मसीही दौड़ में भागने की तैयारी करते हुए पौलुस ने अतीत की व्यर्थ बातों को दूर कर दिया। दूसरा, दौड़ में भाग लेते हुए व्यक्ति का ध्यान आगे की ओर होना चाहिए, न कि पीछे की ओर। पीछे को देखने वाला धावक पूरे ज़ोर से भाग नहीं सकता: उसका ध्यान भटक जाएगा; उसके कदम धीमे हो जाएंगे; उसे ठेडा भी लग सकता है जिससे वह गिर जाए। जैसा कि हम देखेंगे कि पौलुस ने अपना ध्यान भविष्य पर लगाए रखा।

प्राचीन यूनानियों में एक गुरु को एक भावी छात्र बताया, ''मैं तुझे याद रखना सिखा सकता हूं'' छात्र ने उत्तर दिया, ''नहीं आप मुझे भूल जाना सिखाएं।''[10] हम में से कई लोग जो हमें याद रखना चाहिए उसे भूल जाते हैं, पर जिसे भूल जाना चाहिए उसे याद रखते हैं। हमें प्रार्थना करने की आवश्यकता हो सकती है, ''हे प्रभु, हमें अतीत को भूलना सिखा, ताकि हम वर्तमान में जी सकें।''

भविष्य के सम्बन्ध में: उन्नति की आवश्यकता!

कुछ लोग जब अतीत पर ध्यान देते हैं तो उनका ध्यान भटक जाता है या वे निराश हो जाते हैं, पर पौलुस के साथ ऐसा नहीं हुआ। उसने कहा, ''यह एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गईं हैं उनको भूलकर *आगे की बातों की ओर बढ़ता*'' हूं (आयत 13ख, ग)। यह शब्दावली

पिछली आयत जैसी ही है: ''उस पदार्थ को पकड़ने के लिए दौड़ा चला जाता हूं, जिस के लिए मसीह यीशु ने मुझे पकड़ा था'' (आयत 12ख)।

आयत 12 और 13 के दो शब्द अपने उद्देश्य की प्राप्ति में पौलुस की लगन को दिखाते हैं। आयत 12 में अनुवादित शब्द ''बढ़ता हुआ'' शब्द का अनुवाद यूनानी भाषा के *dioko* से किया गया है जिसका अनुवाद पौलुस के कलीसिया को सताने के विवरण के लिए आयत 6 में हुआ है। वह ''उसी लगन के साथ ... और उसी अथक प्रयास के साथ जिससे वह पहले कलीसिया का पीछा करता और उसे सताता था'' अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता जा रहा था।[11] आयत 13 में अनुवादित शब्द ''आगे की बातों की ओर'' (यू.: *epekteinomenos*) का अर्थ ''आगे की ओर बढ़ना'' है। दौड़ में भाग लेने वाले धावक का रूपक है जो हर मांसपेशी को फैलाता, अर्थात दौड़ जीतने के लिए तनाव में लाता है। मैंने अन्तिम रेखा में फीता तोड़ने के लिए आगे की ओर झुके हुए धावकों के उत्साह को देखा है; आपने भी देखा होगा।[12] वर्षों से मैं कई ऐसे लोगों को जानता हूं जो बड़े उत्साह ने सांसारिक सफलता को पाने का पीछा करते हैं यानी जो सांसारिक सफलता को पाने के लिए अपने आपको बढ़ाते हैं। आत्मिक सफलता को पाने के लिए मैंने ऐसे लोगों को बहुत कम देखा है।

प्रेरित किस लक्ष्य के लिए जोर लगा रहा था? उसके लक्ष्य में यह जीवन भी था। आयत 12 में ध्यान दें, जिसमें शब्दों का खेल है: ''... उस पदार्थ को *पकड़ने के लिए* थोड़ा चला जाता हूं, जिस के लिए मसीह यीशु ने मुझे *पकड़ा* था।'' पौलुस को दमिश्क के मार्ग में दिखाई देकर और एक प्रचारक को उसे बपतिस्मा देने और उसे यह बताने के लिए भेजकर कि उसे क्या करना है ''पकड़ा'' था। पौलुस को बताया गया था कि यीशु उसे ''अन्यजातियों'' के पास ... इसलिए'' भेज रहा था ताकि वह ''उनकी आंखें खोले कि वे अंधकार से ज्योति की ओर और शैतान के अधिकार से परमेश्वर की ओर चलें'' (प्रेरितों 26:17, 18क; देखें प्रेरितों 9:15, 16; 22:15; रोमियों 11:13; 1 तीमुथियुस 2:7)। जब पौलुस ने कहा कि वह उसे ''पकड़ना'' चाहता है जिसके लिए उसे ''पकड़ा गया'' था तो वह यह कह रहा था कि वह उस काम को पूरा करना चाहता है जो उसे दिया गया है। उसके जीवन के लिए प्रभु का उद्देश्य अब उसके जीने का मकसद बन गया था।

इसमें हमारे लिए दो सबक हैं, पहला, प्रभु ने पौलुस को ''पकड़ने'' में पहल की। यीशु ने पौलुस की स्वतन्त्र इच्छा को तोड़ने में दखल नहीं दिया, यानी अपने जीवनों में मसीह को काम करने की अनुमति देने से पहले हमें अनुमति देना आवश्यक है, पर उसने पहला कदम अवश्य उठाया। प्रभु हमें ''पकड़ने'' में भी पहल करता है। हम ने उससे पहले प्रेम नहीं किया कि वह उसके बदले में उससे प्रेम करे। इसके बजाय पहले उसने हम से प्रेम किया और इसी कारण हम उससे प्रेम करते हैं (देखें 1 यूहन्ना 4:19)। हम ने आज्ञापालन में अपने प्रेम को व्यक्त नहीं किया, कि वह हमारी ओर से अपने पुत्र को मरने के लिए भेज देता। इसके बजाय चाहे हम परमेश्वर के शत्रु ही थे तौभी मसीह हमारे लिए मरा (देखें रोमियों 5:10)। परमेश्वर का धन्यवाद हो कि ये बात सच थी (और है)!

दूसरा सबक यह है कि पौलुस के लिए परमेश्वर की एक योजना थी और पौलुस इसे पुरा करना चाहता था। परमेश्वर की हमारे जीवनों के लिए भी एक योजना है। उसकी योजना का एक

भाग सामान्य है: मसीह हमें बचाने के लिए हमें ''पकड़ता'' है; यह परमेश्वर की योजना का सबसे महत्वपूर्ण भाग है। उसकी योजना का दूसरा भाग व्यक्तिगत है। रोमियों 12, 1 कुरिन्थियों 12 और अन्य वचन यह संकेत देते हैं कि हम में से हर एक के लिए परमेश्वर के मन में एक विशेष काम है।[13] हर मसीही को यह निर्णय लेना है कि उसकी विशेष सेवकाई क्या है और उसे पूरा करने के लिए पूरी सामर्थ से हर काम करना है। पौलुस की तरह हमें अपने जीवनों के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को अपना मकसद बना लेना चाहिए।

पौलुस के लक्ष्य की चर्चा पर लौटते हुए, इसका इस संसार का पहलू यानी जो कुछ परमेश्वर ने उसके लिए चाहा था, पृथ्वी पर वह बनना था, परन्तु इसमें अगले संसार की भी बात थी। फिलिप्पियों 3 में प्रेरित ने आगे कहा, ''निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह ईनाम पाऊं, जिस के लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है'' (आयत 14)। ''दौड़ा चला जाता हूं'' आयत 12 की तरह उसी मूल शब्द: *dioko* से लिया गया है। अनुवादित शब्द ''निशाना'' (*skopeo* का एक रूप) ''देखना'' (*skopeo*) के अर्थ वाले शब्द का संज्ञा रूप है। इस शब्द का इस्तेमाल ''टेलीस्कोप'' (दूर-देखना) और ''माइक्रोस्कोप'' (छोटा देखना) शब्द इस्तेमाल करते हैं। *Skopos* का इस्तेमाल ''नज़र टिकाने के लिए निशान लगाना'' के लिए होता है।[14] फिर से रूपक अन्तिम रेखा की ओर नज़र टिकाए धावक का ही है (देखें इब्रानियों 12:2)।

परन्तु अन्तिम रेखा तक पहुंचना अपने आप में मंजिल नहीं थी। ईनाम जितना आवश्यक था। पौलुस ने कहा कि वह ''निशाने की ओर दौड़ा चला जाता है'' ''ताकि वह ईनाम पाए जिसके लिए परमेश्वर ने उसे मसीह यीशु ने ऊपर बुलाया है।'' आज वह इनाम कोई मैडल हो सकता है; परन्तु पौलुस के समय के धावक के लिए इनाम आम तौर पर लारेल की पत्तियों का मुकुट होता था जो जल्द मुरझा जाता था। पौलुस एक ऐसे इनाम की राह देख रहा था जिसने कभी मुरझाना नहीं था (देखें 1 कुरिन्थियों 9:24, 25; 2 तीमुथियुस 4:7, 8; 1 पतरस 1:4)। उसने इनाम को ''ऊपर को परमेश्वर की बुलाहट'' कहा। परमेश्वर सुसमाचार के द्वारा हमें बुलाता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:14) और अपने साथ स्वर्ग में रहने का निमन्त्रण देता है (देखें प्रकाशितवाक्य 21:3, 4)। स्वर्गीय ईनाम के विवरण पौलुस ने बारीकी से नहीं बताए पर इस विवरण पर विचार करें:

> ... अपने सभी प्रयासों, कष्टों और बलिदानों साहित पृथ्वी का दृश्य अचानक स्वर्गीय महिमा में मिल जाता है। वचन की एक के बाद एक तस्वीर मन में भर्ती और उठती है: प्रभु के अपने ''धन्य!'' ''धर्म का मुकुट, जिसे प्रभु, जो सच्चा न्यायी है, उस दिन मुझे देगा''; ''महिमा का न मुरझाने वाला मुकुट,'' प्रधान चरवाहे का उपहार; सौभाग्य (सबसे बढ़कर) कि उसके सेवक उसकी आराधना करें, उसके चेहरे को देखें और अपने माथों पर उसका नाम लिखें; प्रभु की सदा सदा की उपस्थिति में लहू से धोए गए वस्त्र। यह सब और, इसके अलावा, ''जो न किसी आंख ने देखा, न किसी कान ने सुना, न किसी के मन में आया, जो परमेश्वर ने उनके लिए तैयार किया है जो उससे प्रीति रखते हैं।''[15]

मुझे और आपको अपने मन स्वर्गीय लक्ष्य पर लगाने आवश्यक हैं। कुलुस्सियों के नाम

लिखते हुए पौलुस ने उनके मसीह बनने की बात की: ''उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए और उसी के साथ परमेश्वर की सामर्थ में विश्वास करके जिन्हें उन्हें मरे हुओं में से जिलाया उसके साथ जी भी उठे'' (कुलुस्सियों 2:12)। फिर कुछ आयतों के बाद उसने और कहा, ''सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परन्तु *स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ*'' (कुलुस्सियों 3:1, 2)।

लोगों पर एकाग्र (3:15, 16)

सच्चा लगाव

पौलुस अपनी और अपने जीवन के ध्यान की बात कर रहा था। 4 से 14 आयतों में हमें बार बार कम से कम ग्यारह बार (''मैं,'' ''मेरे,'' ''मुझे,'') एक वचन मिलता है।[16] इसका अर्थ यह नहीं था कि प्रेरित ने अपने पाठकों को भुला दिया था। आयत 15 में वह अचानक एक वचन से बहुवचन में आ जाता है: ''सो *हम* में से जितने सिद्ध हैं, यही विचार रखें'' (आयत 15क)। पौलुस के जीवन का यही फोकस फिलिप्पियों के जीवन का फोकस भी होना आवश्यक था।

पौलुस और अन्यों के विवरण के लिए ''सिद्ध'' शब्द का इस्तेमाल आश्चर्य लग सकता है क्योंकि आयत 12 में उसने कहा, ''यह मतलब नहीं, कि ... सिद्ध हो चुका हूं।'' यह विरोधाभासी लगने वाली सरल सी व्याख्या है जो इस पर निर्भर करती है कि इसका इस्तेमाल कैसे होता है क्योंकि एक शब्द के अलग-अलग अर्थ हो सकते हैं।[17] आयत 12 में ''सिद्ध'' का अर्थ वही है जिसे हम आमतौर पर ''बेदाग'' शब्द का इस्तेमाल करते समय सोचते हैं। आयत 14 में इसका इस्तेमाल सापेक्षित सिद्धता के लिए है जो इस जीवन में पाई जा सकती है। ''परिपक्व'' शब्द से यह विचार समझ आता है (देखें 1 कुरिन्थियों 14:20; इब्रानियों 5:14)। RSV में आयत 12 में ''सिद्ध'' और आयत 15 में ''परिपक्व'' है। परल पामर ने कहा कि ''पौलुस की ओर से जान बूझकर शब्दों का खेल किया गया हो सकता है: यदि आप परिपक्व हैं तो आप जानते हैं कि आप सिद्ध नहीं हैं; यदि आपको लगता है कि आप सिद्ध हैं, तो आप परिपक्व नहीं हैं।''[18]

हल्का सुधार

पौलुस ने परिपक्व मसीही लोगों से उससे सहमत होने की उम्मीद की जो वह लिख रहा था, परन्तु उसे मालूम था कि बहुत से लोग आत्मिक उन्नति के इस चरण में नहीं पहुंचे हैं (देखें 1 कुरिन्थियों 3:1)। आत्मिक परिपक्वता की एक खूबी परमेश्वर के वचन को समझने की कमी है। पौलुस ने आयत 15 के अन्तिम भाग में अज्ञानियों को सम्बोधित किया: ''यदि किसी बात में तुम्हारा और ही विचार हो तो परमेश्वर उसे भी तुम पर प्रगट कर देगा।'' कइयों को लगता है कि पौलुस यहां विडम्बना और/या ताने का इस्तेमाल कर रहा था, यानी वह तंग सोच वाले अलग मत रखने वालों से बात कर रहा था और व्यंग्यपूर्ण ढंग से कह रहा था, ''यदि तुम मेरे साथ सहमत नहीं हो, तो मुझे निश्चय है कि परमेश्वर तुम्हें तुम्हारे अपने विचारों की पुष्टि के लिए प्रकाशन देगा!'' कई बार अपनी बात को समझाने के लिए परमेश्वर के दूत विडम्बना या

ताने का इस्तेमाल करते थे (देखें 1 राजाओं 18:27), परन्तु यह मानने का कोई कारण नहीं है कि प्रेरित यहां ऐसा ढंग इस्तेमाल कर रहा था।

उसने यह नहीं कहा कि परमेश्वर से उसे कैसे उम्मीद थी कि परमेश्वर उन लोगों पर प्रकाशन देगा। पौलुस के मन में यह बात हो सकती है, न्याय के दिन, इस तथा अन्य विषयों पर सच्चाई अन्त में उन पर प्रगट हो ही जाएगी। फिलिप्पियों की पुस्तक आश्चर्यकर्मों के युग में लिखी गई थी। इसलिए आश्चर्यकर्म के व्यक्तिगत बातचीत की इच्छा हो सकती है। अधिक सम्भावना है कि प्रेरित के मन में परमेश्वर की प्रेरणा जाए दूसरे शिक्षों द्वारा अतिरिक्त शिक्षा की बात हो। जो भी हो उसे यकीन था कि और प्रकाशन मिलने से फिलिप्पियों को बताई गई बातों में कोई उलझन नहीं आएगी।

पौलुस द्वारा सम्भावित मतभेद करने वालों से निपटने का ढंग निर्देशात्मक है। यदि मुझे प्रेरिताई का पौलुस का अधिकार मिला होता तो मैं यह कहने की परीक्षा में पड़ सकता था, ''मेरे साथ असहमत होने का अधिकार तुम्हें किसने दिया? मैं प्रेरित हूं!'' कई बार पौलुस प्रेरिताई के अपने अधिकार का दावा करता था (देखें 1 कुरिन्थियों 14:37, 38; 1 थिस्सलुनीकियों 2:13), परन्तु स्पष्टतया उसे नहीं लगा कि यहां पर इस ढंग का इस्तेमाल सही होगा। इसके बजाय वह इनके साथ, विश्वास व्यक्त करते हुए कि समय बीतने पर वे बेहतर ढंग से सीख जाएंगे, कोमलता से पेश आया।

एक सामान्य आज्ञा

पौलुस ने इस शिक्षा के साथ इस भाग का समापन किया: ''सो जहां तक हम पहुंचे हैं, उसी के अनुसार चलें''[19] (आयत 16)। ''उसी के'' शब्द को ''स्टैंडर्ड'' किया गया है NASB में इटैलिक किया गया है जो यह संकेत देता है कि इसे अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया है। मूल में शब्द को जोड़ कि हम इसी बात के द्वारा जीवन बिताते रहें।'' KJV में ''इसी नियम'' है। ''चलें'' का अनुवाद यूनानी भाषा के शब्द *stoicheo* जिसका अर्थ ''कतार'' या ''पंक्ति'' है के रूप से किया गया है।[20] इसका अर्थ ''के साथ पंक्ति में चलना'' है।[21] प्रेरित के निर्देश की सामान्य प्रासंगिकता हो सकती है: आत्मिक रूप में एक होने के लिए हमें सामान्य अधिकार अर्थात परमेश्वर के वचन का होना आवश्यक है।

परन्तु संदर्भ में पौलुस के शब्द उनके लिए विशेष प्रासंगिकता रखते हैं, जो उससे असहमत हो सकते हैं। खरी शिक्षा के उन्हें रौशन करने के लिए, उन्हें मन का स्वभाव होना आवश्यक था, ''अतिरिक्त प्रकाश'' (शिक्षा) पाने के लिए तैयार होने से पहले उन्हें उस ''प्रकाश'' में चलना आवश्यक था जो पहले से उनके पास था। जो उन्होंने पहले ''पा लिया'' था। जो व्यक्ति वह करने से इनकार करता है जो वह करना जानता है (देखें याकूब 4:17) वह सीखने की स्थिति में नहीं है। LB में 3:15ख, 16 के इस वाक्यांश का अनुवाद इस प्रकार है: ''मैं मानता हूं कि परमेश्वर तुम पर यह स्पष्ट कर देगा–*यदि* तुम पूरी तरह से उस सच्चाई की बात मानों जो तुम्हारे पास है।'' यीशु ने कहा, ''यदि कोई उस की इच्छा पर *चलना* चाहे, तो वह इस उपदेश के विषय में जान जाएगा कि वह परमेश्वर की ओर से है, या मैं अपनी ओर से कहता हूं'' (यूहन्ना 7:17)। डेविड लिप्स कौम ने इसे इस प्रकार कहा है: ''[परमेश्वर की] इच्छा को पूरा करने की किसी

इच्छा या प्राथमिकता के बिना, ईश्वरीय सच्चाई की परिपूर्णता।''[22]

सारांश

इस पाठ में हमने कई सच्चाइयों की बात की है पर मुझे उम्मीद है कि आप फिलिप्पियों 3 में पौलुस का जीवन का लक्ष्य[23] नहीं भूलेंगे:

> हे भाइयो, मेरी भावना यह नहीं कि मैं पकड़ चुका हूं; परन्तु केवल यह एक काम करता हूं, कि जो बातें पीछे रह गई हैं उन को भूल कर आगे की बातों की ओर बढ़ता हुआ। निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इमान पाऊं, जिस के लिए परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है (आयतें 13, 14)।

इसे हम में से हर किसी के लिए व्यक्तिगत बनाने के लिए कह सकते हैं कि पौलुस के शब्द ...

- मुझे तसल्ली देते हैं जब मैं उतना आत्मिक नहीं होता जितना मुझे होना चाहिए।
- जब मुझे लगे कि मसीही जीवन में मैं जितना बड़ सकता था बढ़ चुका हूं, या जितना मुझे बढ़ना चाहिए, मुझ में सुधार करता है।
- मेरे जीवन के लक्ष्य को और स्पष्ट करने में मेरे लिए चुनौती: मसीह पर ध्यान लगाना, अन्त में इनाम पाओ और उन लोगों पर जो मुझे सफ़र में मिलते हैं–परपिक्व और अपरिपक्वता दोनों तरह के।

इस जीवन की कई बातें महत्वपूर्ण हैं परन्तु यीशु के पीछे चलने से कोई महत्वपूर्ण नहीं। आइए प्रार्थना करें, ''हे परमेश्वर मुझे एकाग्र जीवन जीने में सहायता करें, जैसे पौलुस ने जिया।''

टिप्पणियां

[1]हल को घोड़े या खच्चर द्वारा खींचा जाता था। [2]गेरल्ड एफ़. हाथॉर्न, *वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री,* अंक 43, *फिलिप्पियंस,* संपा. डेविड ए. हब्बर्ड एंड ग्लेन डब्ल्यू. बार्कर (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1983), 138. [3]आयत 10 का क्रम वैसे नहीं है, जैसे हम अपेक्षा कर सकते हैं: कष्ट, मृत्यु और पुनरुत्थान के बजाय यह पुनरुत्थान, दुख सहना, और मृत्यु है। शायद क्रम का महत्व है; शायद नहीं। [4]*दि रीज़न वाय में* रॉबर्ट लेडलॉ; एवन मेलोन, *प्रैस टू दि प्राइज* (नैशविल्ले: ट्वंटियथ सेंचुरी क्रिश्चियन, 1991), 84 में उद्धृत। [5]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *दि बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 87. [6]हॉथोर्न, 146. [7]मैं बाइबल टीचरों तथा प्रचारकों के लाभ के लिए यह जानकारी दे रहा हूं। आप निर्णय ले सकते हैं कि आपके सुनने वालों को क्या बताना आवश्यक है। [8]डब्ल्यू. ई. वाइन, *दि एक्सपेंडिड वाइन'स एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स,* संपा. जॉन. आर. कोहलेन्बर्गर इलिनोइस (मिनियापोलिस: बेथनी हाउस पब्लिशर्स, 1984), 845–46. [9]कई लेखकों का मानना है कि यह रूपक पांव पर दौड़ने के बजाय रथों की दौड़ का है। [10]मेलोन, 93.

[11]जॉन ए.नाइट, *बीकन बाइबल एक्सपोज़िशंस,* अंक 9, *फिलिप्पियंस, क्लोसियंस फिलेमोन* (कैन्सास सिटी, मिजोरी: बीकन हिल प्रैस, 1985), 100. [12]आप विजयी धावक का उदाहरण जोड़ सकते हैं जिससे आपके सुनने वाले परिचित हों। [13]रोमियों 12 में, विशेषकर 4 से 8 आयतों को देखें। 1 कुरिन्थियों 12 आश्चर्यकर्म के दानों की बात करता है, परन्तु प्रासंगिकता प्राकृति दानों (योग्यताओं) के लिए बनाई जा सकती है जो परमेश्वर हम में से हर किसी को देताहै। एक और हवाला जिसका इस्तेमाल किया जा सकता है वह है इफिसियों 4:11–16, जिसमें विशेष सेवकाइयों की एक और सूची भी है। यह हवाला पहली सदी के आश्चर्यकर्मों के दानों को प्राकृतिक दानों से

मिला देता है, पर फिर इससे भी सामान्य प्रासंगिकता बनाई जा सकती है। [14]वाइन, 714. [15]अलेस मोटेयर, *दि मैसेज ऑफ़ फिलिपियंस: जीज़स अवर जॉय,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़, संपा. जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट (डाउनर्स ग्रोव, इनिलोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1984), 177. मोटायर ने स्रोतों के रूप में तीन हवाले दिए हैं: लूका 19:17; 2 तीमुथियुस 4:18; 1 पतरस 5:4; प्रकाशितवाक्य 22:3, 4; 7:17; 1 थिस्सलुनीकियों 4:17; 1 कुरिन्थियों 2:9. [16]NASB में, बारहवां एक वचन ''मैं'' अनुवादकों द्वारा जोड़ा गया है। [17]आप अपने सुनने वालों से परिचित शब्द के साथ इसे समझा सकते हैं। बहु-अर्थी शब्द जो ध्यान में आते हैं उनमें ''bear'' और ''fast'' है। [18]अर्ल एफ़. पामर, *इटेर्निटी इन ए वर्ल्ड ऑफ़ प्रिटेंस:* इनसाइट्स फ्रॉम द बुक ऑफ फिलिपियंस (डानउर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 137. [19]KJV में ''चलो वही बात सोचते हैं'' जोड़ा गया है। इस समापन का हस्तलिपी का समर्थन थोड़ा है, पर इससे आयत का अर्थ नहीं बदलता। [20]वाइन, 1207.

[21]जैक, पी. मुल्लर, *दि एपिस्टल ऑफ़ पॉल टू दि फिलिप्पियंस टू फिलेमोन,* दि न्यू इंटरनेशनल कमैंट्री ऑन न्यू टैस्टामेंट संपा. एफ. एफ. ब्रूस, (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं.,1955), 127. [22]डेविड लिप्सकॉम्ब एंड जे. डब्ल्यू. शेपर्ड, *ए कमैंट्री ऑन न्यू टैस्टामेंट एपिस्टल,* अंक 4 *एफिशियंस, फिलिपियंस, एंड कोलोशियंस* (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1939), 210. [23]राल्फ पी. मार्टिन, *दि एपिस्टल ऑफ पॉल टू द फिलिपियंस,* संशो. संस्क. टिंडेल न्यू टैस्टामेंट कमैंट्रीज़, संपा. आर. वी. जी. टास्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1987), 155.